इकाई 4 भूमंडलीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 भूमंडलीकरण का अर्थ
  4.2.1 भूमंडलीकरण के कारक
  4.2.2 भूमंडलीकरण के सूचक
4.3 भूमंडलीकरण के संदर्भ में भारतीय उद्योग
4.4 भारत के लिए अवसर और चुनौतियाँ
4.5 सारांश
4.6 शब्दावली
4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ
4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

4.0 उद्देश्य

यह इकाई भूमंडलीकरण की अवधारण और भूमंडलीकरण के प्रादुर्भाव के लिए उत्तरदायी मुख्य घटकों से संबंधित हैं। इस इकाई में भूमंडलीकरण के सूचकों और भारतीय उद्योग पर इसके संभावित प्रभाव की चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उत्पादन के भूमंडलीकरण का अर्थ समझ सकेंगे;
- भूमंडलीकरण के परिदृश्य के कारकों को पहचान सकेंगे;
- भूमंडलीकरण के सूचकों को पहचान सकेंगे; और
- भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का सामना कर रहे भारतीय उद्योगों की क्षमताओं और दुर्बलताओं के संबंध में जान सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

आप अन्तरराष्ट्रीय व्यापार अर्थात् दो देशों के बीच व्यापार से भलीभाँति परिचित होंगे। एक देश उन वस्तुओं का निर्यात करता है जिसका उत्पादन वह कम लागत पर कर सकता है तथा उन वस्तुओं का आयात करता हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है अथवा जिसका वे अपने देश में उत्पादन नहीं कर सकते हैं। आप जानते हैं कि भारत अन्य वस्तुओं के साथ-साथ चाय, कॉफी और आभूषणों का बहुत बड़ा निर्यातक है। आप यह भी जानते हैं कि भारत कच्चा तेल और औद्योगिक मशीनों का आयात करता है। इसी प्रकार अनेक देश उन उत्पादों का आयात करते हैं जिसका वे कम लागत पर उत्पादन नहीं कर सकते। एक देश का निर्यात दूसरे देश का आयात है। व्यापार के माध्यम से देशों के बीच आर्थिक अन्तर्क्रिया होती है। जब एक देश के श्रमिक किसी दूसरे देश में काम करने जाते हैं तो इससे भी आर्थिक अन्तर्क्रिया होती है। विदेशी कंपनियाँ भारत आती हैं और कार, टी.वी., तथा अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए यहाँ कारखाना लगाती हैं। इसे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कहते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, जो भारत में उत्पादन करती हैं, वे अपने उत्पादों का दूसरे देशों को भी निर्यात करती हैं। विश्व अर्थव्यवस्थाओं के साथ घरेलू अर्थव्यवस्थाओं की बढ़ती हुई अन्तर्क्रिया को सामान्यतया भूमंडलीकरण कहते हैं। अब आप कह सकते हैं कि पहले के वर्षों में भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता था और स्वतंत्रता से पूर्व के वर्षों में भी भारत में बहुराष्ट्रीय

कंपनियाँ मौजूद थीं, तो इस बढ़ती हुई अन्तर्क्रिया जिसे भूमंडलीकरण कहा जाता है के बारे में नया क्या हैं? यह अन्तरराष्ट्रीयकरण से भिन्न कैसे है? कौन से कारक इस बढ़ते हुए अन्तर्क्रिया के लिए उत्तरदायी है? अथवा कौन से कारकों ने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को तेज़ कर दिया है। यहाँ हमारा संबंध मुख्यरूप से उत्पादन संबंधी गतिविधियों के भूमंडलीकरण से है।

4.2 भूमंडलीकरण का अर्थ

हमने भूमंडलीकरण की परिभाषा विश्व अर्थव्यवस्था के साथ घरेलू अर्थव्यवस्था की बढ़ती हुई अन्तर्क्रिया की प्रक्रिया के रूप में की है। यह अन्तर्क्रिया वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार तथा अन्तरराष्ट्रीय निवेश के माध्यम से होती है। भूमंडलीकरण का एक महत्त्वपूर्ण सूचक विश्व उत्पादन में निर्यात का बढ़ता हुआ हिस्सा है। इस समय विश्व उत्पादन का पाँचवाँ हिस्सा अर्थात् 20 प्रतिशत से अधिक का निर्यात होता है। 1950 के दशक में यह 10 प्रतिशत से भी कम था। इसी प्रकार विश्व के विनिर्माण उत्पादन में विनिर्माण निर्यात का हिस्सा काफी बढ़ा है। यह उत्पादन कार्यकलापों के तीव्र भूमंडलीकरण का द्योतक है। तब इस प्रक्रिया में नया क्या है?

अन्तरराष्ट्रीय श्रम विभाजन की प्रक्रिया में अगला चरण भूमंडलीकरण है। उत्पादक उत्पादन प्रक्रिया को विभिन्न चरणों में विभक्त करने की कला सीख चुके हैं। अब एक वस्तु का उत्पादन कई चरणों में होता है तथा प्रत्येक चरण अलग-अलग देशों में पूरा किया जाता है। अब हम एक अत्यन्त साधारण उदाहरण लेते हैं। रंगीन टेलीविज़न का उत्पादन तीन चरणों में होता है। पहला चरण टी.वी. का डिज़ायन तैयार करना है, दूसरा चरण टी.वी. के विभिन्न पुर्जों का विनिर्माण और तीसरा चरण इन पुर्जों को जोड़कर टी.वी. तैयार करना है। एक अमरीकी कंपनी टी.वी. का डिज़ायन तैयार करती है और फिर वह मलेशिया में उत्पादकों को टी.वी. के पुर्जे तैयार करने का आदेश देती है। ऐसा क्यों? क्योंकि मलेशिया में पुर्जा तैयार करना अमरीका की अपेक्षा सस्ता है। मलेशिया के उत्पादक पुर्जे तैयार करने के बाद इसे चीन निर्यात कर देते हैं। क्यों? क्योंकि चीन में टी.वी. तैयार करने के लिए पुर्जे जोड़ने की मजदूरी लागत अत्यन्त ही कम है और अमरीकी कम्पनी ने उन्हें पुर्जों को चीन भेजने के लिए कहा है। चीन की कंपनी पुर्जों को जोड़कर टी.वी. तैयार करती है और फिर इनका निर्यात अमरीकी कंपनी को कर देती है। फिर अमरीकी कंपनी इसे उपभोक्ताओं के हाथ बेचती है। कई वस्तुओं के उत्पादन को इस तरह से अलग-अलग चरणों में बाँटना संभव है। उत्पादन का प्रत्येक चरण उस देश में पूरा किया जाता है जहाँ उस चरण को पूरा करने की सबसे अनुकूल दशाएँ होती हैं। विकसित देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उत्पादन के भूमंडलीकरण की इस प्रक्रिया में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। आप अमरीका की फोर्ड मोटर कंपनी के बारे में अवश्य जानते होंगे। यह यूरोपीय बाज़ार के लिए फोर्ड एस्कोर्ट कार का उत्पादन करती है। इस कार के कल-पुर्जे स्पेन में जोड़े जाते हैं। इस कार के विभिन्न कल-पुर्जे विभिन्न उत्पादकों द्वारा विनिर्मित किए जाते हैं तथा फोर्ड कंपनी को निर्यात कर दिए जाते हैं। ये निम्नलिखित स्थानों पर अवस्थित हैं :

1) क्लच और स्टीयरिंग व्हील (युनाइटेड किंगडम)

2) ग्लास (कनाडा)

3) फैन बेल्ट (डेनमार्क)

4) कार्बुरेटर लैम्प (इटली)

5) स्पीडोमीटर (जर्मनी)

6) इंजन (अमरीका)

7) टायर (नीदरलैंड)

दूसरे शब्दों में, भूमंडलीकरण का अभिप्राय विभिन्न देशों की उत्पादन प्रणालियों के बीच सशक्त सहलग्नता से है। भूमंडलीकरण से विभिन्न देशों में स्थित उत्पादन इकाइयों के नेटवर्क का

प्रादुर्भाव हुआ है। इस तरह से विकासशील देश अन्तरराष्ट्रीय व्यापार में हिस्सा लेकर लाभ उठाते हैं। वे उत्पादन के श्रम प्रधान चरणों में विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं क्योंकि वहाँ जनसंख्या और श्रम बल का बहुतायत होता है।

4.2.1 भूमंडलीकरण के कारक

श्रम का इस तरह से अंतरराष्ट्रीय विभाजन सिर्फ 1980 और 1990 के दशकों के दौरान ही क्यों हो सका? यह पहले भी विद्यमान था किंतु अस्सी और नब्बे के दशक में इसका तीव्र विकास हुआ। इसके दो महत्त्वपूर्ण कारण बताए जा सकते हैं। एक, विकसित देशों में मजदूरी लागत अपेक्षाकृत अधिक थी और वहीं विकासशील देशों में यह अपेक्षाकृत कम थी। विकसित देशों के उत्पादक विकासशील देशों में कम उत्पादन लागत का लाभ उठाना चाहते थे। दो, अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के मार्ग में मौजूद अवरोधों में कुछ कमी आई। ये अवरोध क्या थे?

i) सर्वप्रथम, देश आयातित वस्तुओं पर बहुत ज्यादा टैरिफ (कर) लगाते थे। गैट के अन्तर्गत विकसित देशों ने विकासशील देशों से आयातित वस्तुओं पर धीरे-धीरे परक्रामण टैरिफ (negotiations tariffs) घटा दिया। विकसित देशों में 1950 के दशक में आयातित वस्तुओं पर 50 प्रतिशत कर हुआ करता था जबकि 1980 के दशक में यह घट कर मात्र 4 प्रतिशत ही रह गया।

ii) दूसरा, परिवहन लागत में कमी आई है। इससे अन्तरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिला। उदाहरण के लिए, आप जानते हैं कि दूसरे देशों को जहाजों से वस्तुएँ भेजी जाती हैं। 1980 से 1996 के दौरान समुद्र मार्ग से वस्तुओं के विदेश भेजने के माल ढुलाई भाड़ा लागत में 70 प्रतिशत की कमी आई। विगत 15 वर्षों के दौरान वायुमार्ग से भी माल ढुलाई के भाड़े में कमी हुई है।

iii) तीसरा, संचार लागत में कमी आई है। विकसित देशों में अन्तरराष्ट्रीय कॉल के प्रति मिनट लागत में भारी कमी आई है। अमरीका में स्थित एक उत्पादक के लिए किसी विकासशील देश में स्थित उत्पादक को टेलीफोन करना और उससे सम्पर्क साधना अत्यन्त ही सस्ता है। संक्षेप में, दो देशों के बीच लम्बी दूरी के संचार लागत में भारी कमी आई है। इससे विभिन्न देशों में स्थित उत्पादकों का भूमंडलीय संजाल (नेटवर्क) स्थापित करने में काफी मदद मिली है। इसे ही भूमंडलीकरण समझा जाने लगा।

बोध प्रश्न 1

1) अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) अन्तरराष्ट्रीय व्यापार और अन्तरराष्ट्रीय निवेश में अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) उन तीन प्रमुख माध्यमों का उल्लेख कीजिए जिनके द्वारा घरेलू अर्थव्यवस्था और विश्व अर्थव्यवस्था के बीच संपर्क होता है।

.....

.....

.....

.....

.....

4) भूमंडलीकरण के कारकों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.2.2 भूमंडलीकरण के सूचक

भूमंडलीकरण का एक महत्त्वपूर्ण सूचक सकल घरेलू उत्पाद में व्यापार का अनुपात है। एक देश के विदेश व्यापार की मात्रा निर्यात और आयात के कुल मूल्य से मापा जाता हैं। सकल घरेलू उत्पाद में व्यापार का अनुपात निकालने के लिए इस संख्या को *'सकल घरेलू उत्पाद'* से विभाजित कर दिया जाता है। तालिका 4.1 में कुछ चुने हुए देशों का व्यापार/सकल घरेलू उत्पाद अनुपात प्रस्तुत किया गया है। यह ध्यान देने योग्य है कि भारत का व्यापार/सकल घरेलू उत्पाद अनुपात समय के साथ बढ़ा है किंतु यह चीन और श्रीलंका की अपेक्षा काफी कम है। इससे यह पता चलता है कि भारत की अपेक्षा चीन और श्रीलंका विश्व अर्थव्यवस्था के साथ कहीं अधिक अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं। भारत अभी भी विश्व अर्थव्यवस्था के प्रभावों के प्रति अपेक्षाकृत कम संवेदनशील है। तालिका 4.2 में अग्रणी निर्यातक और आयातक देशों से संबंधित आँकड़े प्रस्तुत हैं। ध्यान दीजिए कि विश्व में सभी अग्रणी निर्यातक देश अग्रणी आयातक भी हैं। इससे यह पता चलता है कि विश्व अर्थव्यवस्था में देशों के दक्ष निर्यातक बनने के लिए बहुत सी वस्तुओं का आयात करना पड़ता है। किंतु यह जरूरी नहीं कि जो देश आयात कम करते हैं उनका निर्यात निष्पादन भी अच्छा हो। प्रत्येक देश को सफल निर्यातक बनने के लिए कई वस्तुओं की जरूरत होती है जिसके लिए वह विश्व अर्थव्यवस्था पर निर्भर करता है।

तालिका 4.1 : चुने हुए देशों का व्यापार/सकल घरेलू उत्पाद अनुपात

देश/समूह	1975-79	1990-94
विश्व	34.7	39.2
विकासशील देश	31.8	42.8
चीन	10.0	35.8
भारत	14.1	21.0
श्रीलंका	68.1	72.5

स्रोत: विश्व बैंक, 1997

तालिका 4.2 : विश्व के वाणिज्यिक-वस्तु व्यापार के अग्रणी निर्यातक और आयातक, 1997
(विश्व निर्यात और आयात में प्रतिशत अंश)

निर्यातक	अंश	आयातक	अंश
अमरीका	12.6	अमरीका	16.0
जर्मनी	9.4	जर्मनी	7.8
जापान	7.7	जापान	6.0
फ्रांस	5.3	फ्रांस	4.8
ब्रिटेन	5.2	ब्रिटेन	5.5
चीन	3.3	चीन	2.5
दक्षिण कोरिया	–	दक्षिण कोरिया	2.6
ताइवान	2.6	ताइवान	2.0

स्रोत : विश्व व्यापार संगठन रिपोर्ट 1998

निम्नलिखत उदाहरण उत्पादन के भूमंडलीकरण की घटना को समझने में सहायक हैं :

क) विकासशील देशों में अवस्थित बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सम्बद्ध कंपनियों के उत्पादन का अंश विकासशील देशों के सकल घरेलू उत्पाद में बढ़ चुका है। वर्ष 1992 में उनका अंश 4.2 प्रतिशत था जो 1995 में बढ़ कर 6.3 प्रतिशत हो गया है।

ख) विश्व व्यापार में मशीन और कल-पुर्जों के क्षेत्र में कल पुर्जो के व्यापार में तेजी से वृद्धि हो रही है। विकासशील देशों ने 1995 में लगभग 100 बिलियन डॉलर मूल्य के इन उत्पादों का निर्यात किया था।

ग) चीन से हाँग-काँग के पुन: निर्यात का लगभग 80 प्रतिशत बहिर्गामी प्रसंस्करण प्रबन्धों का परिणाम था। इस व्यवस्था के अन्तर्गत हाँग-काँग की फर्में चीनी उपक्रमों को उत्पादों के असेम्बली के आदेश देती हैं। तत्पश्चात् वे चीनी उपक्रमों को डिज़ायन और कलपुर्जे उपलब्ध कराती हैं। चीन द्वारा आपूर्ति की गई तैयार माल हाँग-काँग की फर्म द्वारा निर्यात किया जाता था।

4.3 भूमंडलीकरण के संदर्भ में भारतीय उद्योग

इस भाग में हम उद्योग और विनिर्माण शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में करेंगे। भारतीय विनिर्माण क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 22 प्रतिशत और भारत के कुल निर्यात में लगभग 75 प्रतिशत का योगदान है। इस रूप में यह भारतीय अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। तथापि, विश्व निर्यात बाज़ारों में भारत का हिस्सा अत्यंत कम है। नीचे दी गई तालिका 4.3 में विश्व के विनिर्माण निर्यातों में विभिन्न देशों का हिस्सा प्रतिशत में दिखलाया गया है।

तालिका 4.3 : विश्व निर्यात में विनिर्माण निर्यात का हिस्सा प्रतिशत में

देश	1980-86	1987-90	1993-96
भारत	0.29	0.4	0.51
चीन	उपलब्ध नहीं	1.84	3.74

थाइलैण्ड	0.24	0.5	0.88
मलेशिया	0.54	0.67	1.58
इंडोनेशिया	0.19	0.37	0.73
फिलीपींस	0.17	0.16	0.28
दक्षिण कोरिया	2.11	2.76	3.02
ताइवान	2.19	2.89	2.9
बाज़ार का आकार अमरीकी बिलियन डॉलर में	1105	1997	3284

स्रोत : बिजनेस वर्ल्ड, 25 जून, 2001

उपर्युक्त तालिका में हम देख सकते हैं कि भारत के हिस्से में कुछ ही प्रतिशत वृद्धि हुई है। वर्ष 1980-86 के दौरान विनिर्माण निर्यात में यह हिस्सा मात्र 0.29 प्रतिशत था। 1993-96 की अवधि में इसमें वृद्धि हुई और यह 0.51 प्रतिशत हो गया। भारत की अपेक्षा, कई अन्य देशों का कार्य निष्पादन बहुत ही अच्छा रहा। उदाहरण के लिए चीन जिसका 1987-90 के दौरान 1.84 प्रतिशत हिस्सा था, 1993-96 के दौरान बढ़कर यह 3.7 प्रतिशत से अधिक हो गया।

अब हम चुने हुए उत्पादों में भारत के निर्यात निष्पादन पर दृष्टि डालते हैं। हमने उन उत्पादों का चयन किया है जिसका उत्पादन भूमंडलीकृत हो चुका है। इन्हें तालिका 4.4 में दिखाया गया है। स्त्री परिधान को छोड़कर विश्व निर्यात में भारत का हिस्सा अत्यन्त कम है। विश्व निर्यात में भारत का हिस्सा कैसे बढ़ाया जाए? भारतीय औद्योगिक क्षेत्र की शक्तियाँ और कमजोरियाँ क्या हैं? भारत को एक ऐसे आकर्षक स्रोत में कैसे बदला जाए जहाँ से विदेशी कंपनियाँ कल-पुर्जे खरीद कर अपनी जरूरत पूरी करें? आपको औद्योगिक अर्थशास्त्र संबंधी ज्ञान का उपयोग करते हुए इन प्रश्नों पर विचार करना चाहिए।

तालिका 4.4: चयनित भूमंडलीकृत उत्पादों में भारत का निर्यात हिस्सा

विवरण	प्रतिशत हिस्सा
स्त्री परिधान, बुनाई किया हुआ	4.7
पुरुष परिधान	2.8
जूते-चप्पल	1.7
खिलौने	0.3
मोटर पार्ट्स और सहायक उपकरण	0.2
आंतरिक दहन इंजन	0.2
कम्प्यूटर उपकरण	0.03
वॉल्व और ट्रांजिस्टर	0.1

स्रोत : रामास्वामी (2000)

बोध प्रश्न 2

1) उन सूचकों का वर्णन करें जिसे आप भूमंडलीकरण के पैमाना के लिए प्रयोग करेंगे।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उन देशों के नाम बताइये जिनका विश्व निर्यात में हिस्सा 1986 में भारत से कम था।

.....

.....

.....

.....

.....

3) वर्ष 1996 में उनका हिस्सा कितना हो गया?

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 भारत के लिए अवसर और चुनौतियाँ

भारत भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था में सहभागी बनकर लाभ उठा सकता है; जिससे इसे प्रौद्योगिकी, प्रबन्धन विशेषज्ञता और विश्व बाज़ार उपलब्ध होगा। एक लाभ यह भी है कि भारत का घरेलू बाज़ार बहुत ही विस्तृत है। इसके साथ ही भारत अपने सस्ते श्रम और बड़ी संख्या में वैज्ञानिक तथा शिक्षित जनशक्ति के कारण भी लाभ की स्थिति में है। यह भारत में विदेशी निवेश को आकृष्ट करता है। तब आप पूछ सकते हैं कि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का प्रवाह भारत की ओर न होकर चीन की ओर क्यों है।

किंतु यहाँ की सबसे बड़ी समस्या आधारभूत संरचना और श्रम की उत्पादकता है। भारतीय औद्योगिक उत्पादकों के लिए उपलब्ध आधारभूत संरचना की गुणवत्ता अत्यधिक घटिया है। विद्युत की आपूर्ति निर्बाध नहीं है तथा इसमें समय-समय पर गड़बड़ी होती रहती है। इससे काम ठप हो जाता है तथा क्षमता का कम उपयोग हो पाता है।

दूसरा, यहाँ पत्तन और सीमा शुल्क प्रक्रियाएँ सुचारू और सरल नहीं हैं। यह देखा गया है कि चीन से किसी उत्पाद के आयात में जहाँ मात्र एक महीना लगता है वहीं भारत से आयात करने मे दो माह से अधिक लग जाता है।

तीसरा, हमें अपने मानव पूँजी आधार में सुधार करने की आवश्यकता है। भारतीय श्रम सस्ता हो सकता है, किंतु साथ ही यह भी सत्य है कि भारतीय श्रम की उत्पादकता भी अन्य देशों की तुलना में कम है।

उत्पादकता में सुधार करने के लिए हमें नया ज्ञान सीखने और अपने श्रमबल को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। भारत में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त लोगों की संख्या दक्षिण कोरिया की

तुलना में भी बहुत कम है। भारत को मानव पूँजी में अधिक निवेश करने की आवश्यकता है।

विद्युत, परिवहन और संचार सुविधाओं की उपलब्धता निवेश को आकर्षित करते हैं। भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था में सहभागी बनने और सफल होने के लिए दो मूल आवश्यकताएँ हैं - अच्छी आधारभूत संरचना और श्रम की अधिक उत्पादकता। इसके लिए ज़्यादा से ज़्यादा निवेश की जरूरत होती है।

बोध प्रश्न 3

1) विश्व अर्थव्यवस्था में सहभागी बनने से भारत को होने वाले लाभों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आपके विचारानुसार भारत को अधिक विदेशी निवेश आकृष्ट करने के लिए क्या करना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 सारांश

इस इकाई से भूमंडलीकरण की अवधारण स्पष्ट हो जाती है। इस इकाई को पढ़कर हमें जानकारी होती है कि आज अर्थव्यवस्थाएँ कहीं अधिक अन्तर्संबंधित हैं। यह हमें विश्व अर्थव्यवस्थाएँ किस तरह से परस्पर जुड़ी हुई हैं उसकी जानकारी देता है। भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अग्रणी भूमिका निभाती हैं। वे विभिन्न देशों में उत्पादन कराती हैं। भूमंडलीकरण का मुख्य कारण विकसित और विकासशील देशों के बीच उत्पादन की मजदूरी लागत में अंतर है। परिवहन और संचार लागतों में कमी भी भूमंडलीकरण को बढ़ावा देने वाला दूसरा महत्त्वपूर्ण कारक है। भारत में बहुत बड़ा बाज़ार उपलब्ध होने की कुछ लाभ और हानियाँ हैं। भारत को भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था में सहभागी बन इसका लाभ उठाने के लिए आधारभूत संरचना और मानव पूँजी में निवेश करने की आवश्यकता है।

4.6 शब्दावली

भूमंडलीकरण : विश्व अर्थव्यवस्था के साथ बढ़ती हुई अन्तर्क्रिया।

सकल घरेलू उत्पाद में व्यापार का अनुपात : सकल घरेलू उत्पाद में निर्यात और आयात के मूल्य का अनुपात।

भूमंडलीकरण के सूचक : विश्व उत्पादन में विश्व निर्यात का हिस्सा।

मजदूरी लागत और श्रम उत्पादकता : नियोजित श्रमिकों को भुगतान की गई मजदूरी और प्रति श्रमिक उत्पादन

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ

किरीट एस. पारिख (सम्पादित); (2000). *इंडिया डेवलपमेंट रिपोर्ट 1999-2000*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

के.वी. रामास्वामी, "एक्सपोर्टिंग इन ए ग्लोबलाइज्ड इकनॉमी", किरीट पारिख (संपा.), *इंडिया डेवलपमेंट रिर्पोट 1999-2000*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

विश्व बैंक; (1997). *साउथ एशियाज इंट्रीग्रेशन इन्टू द वर्ल्ड इकनॉमी*।

विश्व व्यापार संगठन; (डब्ल्यू. टी. ओ.) (1998). *वार्षिक प्रतिवेदन*, वाशिंगटन डी.सी.।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 4.1 देखें

2) भाग 4.1 देखें

3) उपभाग 4.1.1 देखें

4) उपभाग 4.1.2 देखें

बोध प्रश्न 2

1) भाग 4.2 देखें

2) कॉलम 1, तालिका 4.2 देखें

3) कॉलम 4, तालिका 4.2 देखें

बोध प्रश्न 3

1) भाग 4.4 देखें

2) भाग 4.4 देखें